द्विवेदी युगीन हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृतियां

हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र-5

आधुनिक हिंदी साहित्य में सन् 1900 ई० से 1918 ई० तक के कालखंड को द्विवेदी युग की संज्ञा दी गई है | इस युग के साहित्य को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने समग्रता से प्रभावित किया है | 'सरस्वती' के संपादक के रूप में उन्होंने हिंदी साहित्य को परिष्कृत एवं समृद्ध किया | आचार्य द्विवेदी के साहित्य-सेवा को सम्मान देते हुए इस कालखंड को 'द्विवेदी युग' की संज्ञा दी गयी है | इसी युग की साहित्यिक प्रवृत्तियां निम्न हैं :-

राष्ट्रीयता की भावना :-

यह युग राष्ट्रीय आंदोलन का युग था | इस युग के काव्यों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर तीव्र है | द्विवेदी युगीन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से नागरिकों के हृदय में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का प्रयास किया | गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही' ने अपनी राष्ट्रीय भावना को प्रकट करते हुए लिखा है -

"जिसको नहीं निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,

वह नर नहीं नर पशु, निरा और मृतक समान है"

इस युग में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने 'भारत भारती' नामक काव्य के माध्यम से भारतीय जनता को भारत के अतीत गौरव तथा वर्तमान दशा से अवगत कराया | नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता को राष्ट्र-वेदी पर कुर्बान होने की शिक्षा दी है -

"देशभक्त वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा |

आदर्शवाद एवं नैतिकता :-

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से लोगों में नैतिकता भरने का काम किया | स्वामी दयानंद के 'आर्य समाज' से प्रभावित होकर उन्होंने सदाचार, ब्रह्मचार्य, नैतिकता, कर्त्तव्यपरायणता आदि को काव्य के माध्यम से बढ़ावा दिया | इस युग की कविताओं में रीतिकालीन श्रृंगारवाद ,अश्लीलता आदि पर प्रतिबंध लगा दिया गया | महावीर प्रसाद द्विवेदी ने निराला की कविता 'जूही की कली' को सरस्वती में प्रकाशित करने से यह कहकर मना कर दिया कि इस कविता में अश्लीलता है |

सामाजिक समस्याओं का चित्रण :-

इस युग की कविताओं में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड, आडंबरप्रियता आदि सामाजिक बुराइयों का विरोध किया गया | आर्यसमाजियों ने सती प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि का विरोध एवं विधवा विवाह, अंतरजातीय विवाह आदि का समर्थन किया |

मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत भारती' में वर्तमान दुर्दशा का सफल चित्रण किया गया है |

नारी -भावना :-

रीतिकालीन कवियों ने नारी को भोग की वस्तु बना दिया था | आधुनिक काल में नारी को सम्मान-पूर्ण स्थान मिला | द्विवेदी युगीन कवियों ने नारी को पूज्यनीय माना है | मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्यों के माध्यम से उपेक्षित आदर्श नारियों का चित्रण किया है | 'यशोधरा' नामक ग्रंथ में वे नारी महत्ता को स्थापित करते हुए लिखते हैं-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी

आंचल में है दूध, आंखों में पानी |

प्रकृति- चित्रण:-

द्विवेदी युगीन कवि प्रकृति चित्रण में भी सिद्धस्त थे | इस युग में प्रकृति का चित्रण उद्दीपन एवं आलंबन दोनों ही रूपों में हुआ है | इस युग के प्रसिद्ध कवि हरिऔध ने अपनी रचना 'प्रियप्रवास' में निम्न शब्दों में प्रकृति का सौंदर्य चित्रण किया है -

दिवस का अवसान समीप था

गगन था कुछ लोहित हो चला

तरु शिखा पर थी अब राजती

कमली निकुल वल्लभ की प्रभा |

इतिवृत्तात्मकता :-

इस युग के काव्य में मुक्त छंद के स्थान पर इतिवृत्त को महत्व दिया गया | कवियों ने कथा के आधार पर अपने काव्यों का सृजन किया | मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत, यशोधरा, जयद्रथवध, द्वापर आदि इतिवृत्तात्मक काव्य रचनाएं हैं | अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत प्रियप्रवास एवं वैदेही वनवास भी इसी परंपरा के काव्य हैं |

खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग :-

रीतिकाल के लगभग 200 वर्षों के विशाल समय तक ब्रजभाषा का काव्य भाषा के रूप में एकछत्र राज रहा | भारतेंदु युग में गद्य साहित्य की भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास हुआ परंतु काव्य भाषा पूर्ववत ब्रज भाषा ही रही | द्विवेदी युग में पहली बार काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली हिंदी को स्थापित किया गया | इसका श्रेय पूर्णतः महावीर प्रसाद द्विवेदी को जाता है | 'प्रियप्रवास' (1914 ई०) खड़ी बोली का पहला महाकाव्य है |

निष्कर्षत: हम देखते हैं कि भारतेंदु युग यदि आधुनिक साहित्य का प्रवेश द्वार है तो द्विवेदी युग उसका विस्तृत प्रांगण है | इस युग के साहित्य पर आचार्य महावीर प्रसाद 'द्विवेदी' का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है | साहित्य में नैतिकता को स्थापित करने एवं खड़ी बोली को काव्य भाषा बनाने में उनका योगदान अविस्मरणीय है |

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल

पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना ।